आप भी यूं करें एक संवाद, 'अपने साथ...'

स्वामी विवेकानंद: मैं समय नहीं निकाल पाता। जीवन आपा-धापी से भर गया है।

रामकृष्ण परमहंस: गतिविधियां तुम्हें घेरे रखती हैं। लेकिन उत्पादकता आज़ाद करती है।

स्वामी विवेकानंद: आज जीवन इतना जटिल क्यों हो गया है?

रामकृष्ण परमहंस: जीवन का विश्लेषण करना बंद कर दो। यह इसे जटिल बना देता है। जीवन को सिर्फ जियो।

स्वामी विवेकानंद: फिर हम हमेशा दु:खी क्यों रहते हैं?

रामकृष्ण परमहंस: परेशान होना तुम्हारी आदत बन गयी है। इसी वजह से तुम खुश नहीं रह पाते।

स्वामी विवेकानंद: अच्छे लोग हमेशा दु:ख क्यों पाते हैं?

रामकृष्ण परमहंस: हीरा रगड़े जाने पर ही चमकता है। सोने को शुद्ध होने के लिए आग में तपना पड़ता है। अच्छे लोग दु:ख नहीं पाते, बल्कि परीक्षाओं से गुज़रते हैं। इस अनुभव से उनका जीवन बेहतर होता है, बेकार नहीं होता।

स्वामी विवेकानंद: आपका मतलब है कि ऐसा अनुभव उपयोगी होता है?

रामकृष्ण परमहंस: हाँ, हर लिहाज से अनुभव एक कठोर शिक्षक की तरह है। पहले वह परीक्षा लेता है और फिर सीख देता है।

स्वामी विवेकानंद: समस्याओं से घिरे रहने के कारण हम जान ही नहीं पाते कि किधर

जा रहे हैं...।

रामकृष्ण परमहंस: अगर तुम अपने बाहर झाँकोगे तो जान नहीं पाओगे कि कहां जा रहे हो। अपने भीतर झाँको। आँखें दृष्टि देती हैं, हृदय राह दिखाता है।

स्वामी विवेकानंद: क्या असफलता सही राह पर चलने से ज़्यादा कष्टकारी है?

रामकृष्ण परमहंस: सफलता वह पैमाना है जो दूसरे लोग तय करते हैं। संतुष्टता का पैमाना तुम खुद तय करते हो।

स्वामी विवेकानंद: कठिन समय में कोई अपना उत्साह कैसे बनाए रख सकता है?

रामकृष्ण परमहंस: हमेशा इस बात पर ध्यान दो कि तुम अब तक कितना चल पाए, बजाय इसके कि अभी और कितना चलना बाकी है। जो कुछ पाया है, हमेशा उसे गिनो; जो हासिल न हो सका उसे नहीं।

स्वामी विवेकानंद: लोगों की कौन सी बात आपको हैरान करती है?

रामकृष्ण परमहंस: जब भी वे कष्ट में होते हैं तो पूछते हैं, 'मैं ही क्यों?' जब वे खुशियों में डूबे रहते हैं तो कभी नहीं सोचते, 'मैं ही क्यों?'

स्वामी विवेकानंद: मैं अपने जीवन से सर्वोत्तम कैसे हासिल कर सकता हूँ?

रामकृष्ण परमहंस: बिना किसी अफ़सोस के अपने अतीत का सामना करो। पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने वर्तमान को सम्भालो। निडर होकर अपने भविष्य की तैयारी करो।

स्वामी विवेकानंद: कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरी प्रार्थनाएं बेकार जा रही हैं...।

रामकृष्ण परमहंस: कोई भी प्रार्थना बेकार नहीं जाती। अपनी आस्था बनाए रखो और डर को परे रखो। जीवन एक रहस्य है जिसे तुम्हें खोजना है। यह कोई समस्या नहीं जिसे तुम्हें सुलझाना है। मेरा विश्वास करो- अगर तुम यह जान जाओ कि जीना कैसे है तो जीवन सचमुच बेहद आश्चर्यजनक है...!!

पेन किलर बनी... - पेज 6 का शेष...

लेकिन जब मुझे यह महसूस हुआ कि यह बहनें नि:शुल्क परमात्मा की सेवा करती हैं तो मैंने जून 2012 में कोर्स किया और मुझे यह ज्ञान बहुत ही अच्छा लगा। कोर्स के पहले दिन से ही मैंने मुरली की पढ़ाई शुरू कर दी। शरीर में तीव्र दर्द होने के कारण सेंटर पर मैं मुरली क्लास में नहीं जा पाता था। तो मैं एक सप्ताह पुरानी मुरली ब्रह्माकुमारी बहनों से ले आता और घर में ही पढ़ता। मैंने मुरली की प्वॉइंट्स को यूज़ करना शुरू किया। पहला वाक्य जो मेरी दिल को छू गया...

अव्यक्त महावाक्य - "जो बच्चे मेरी याद में मगन रहते हैं, उनके सोचने का कार्य भी मैं करता हूँ।"

मैं प्रयोग करता गया और अशरीरी अवस्था में पेनलेस महसूस करने लगा। मुझे योग में बहुत आनंद आने लगा। यह मेरे लिए पेनकिलर बन गया था। रोज़ सुबह अमृतवेले बाबा की याद में मेरी आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगते थे। मुझे निश्चय हो गया कि यह वही मेरा बाबा है। तब मैंने जो उपवास ले रखा था 21 महीनों का, उसे छोड़ दिया। तब तक मेरा वज़न 48किलोग्राम हो गया था और सिर्फ हड्डियों का ढ़ाँचा रह गया था। गर्दन लॉक्ड, स्पाइन लॉक्ड, बोथ ज्वाइन्ट्स पूरे खराब हो चुके थे। मैं पूरा झुक गया था। मैं जैसे-तैसे लंगड़ा के चलता था। लोगों को तो लगा कि बस यह कुछ ही दिनों का मेहमान है।

मैं जीवन की जंग हार चुका था, लेकिन हिम्मत नहीं हारा था। दिन-रात बस मैं ज्ञान-योग में लग गया। मैं दिन में 7-8 घंटे परमात्मा की याद में सर्व समस्याएं अर्पित कर बिंदू में समा जाता। अव्यक्त महावाक्य - "मेरे को तेरे में परिवर्तन कर फिक्र बाप को दे, फखुर ले लो अर्थात् बेफिक्र बादशाह बनो।"

इसी दौरान अमृतवेले मुझे एक बार चतुर्भुज विष्णु के और कई बार बिंदू स्वरूप परमात्मा के साक्षात्कार हुए। परमात्मा की लगन में इतना मगन था कि मुझे समय का भान ही नहीं रहता था। दिन-रात बस मैं ज्ञान-योग तथा दादियों एवं वरिष्ठ भाइयों के परमात्मा के साथ के अनुभव की क्लास सुनता रहता था। जनवरी 2015 में मुझे हिप्स ज्वाइंट्स का ऑपरेशन करवाना था, लेकिन ऑपरेशन में रिस्क इतना था जो मैं निर्णय नहीं ले पा रहा था। दिन-रात सोच-सोचकर कोई निर्णय न निकलने पर मैंने सोते समय बाबा को शरीर अर्पण कर बाबा को कहा, तू ही बता कि मैं क्या करूँ? और सूक्ष्मवतन में बाबा की गोद में सो गया। उसी रात स्वप्न में बाबा ने कहा, ऑपरेशन इसी महीने में करवा लो, बाबा बैठा है, आप बेफिक्र रहो। आज तक वह चित्र बुद्धि रूपी नेत्र के सामने स्पष्ट है। अगले दिन ही मैंने ऑपरेशन की तैयारी शुरू कर दी। ऑपरेशन 100 प्रतिशत सक्सेसफुल हुआ। फरवरी 2015 तक मैं नॉर्मल चलने फिरने लगा। बस उसी घड़ी मैंने निश्चय कर लिया कि यह जीवन बोनस परमात्मा की सौगात है और यह शरीर आज से ईश्वरीय सेवा में अर्पित है।

अव्यक्त महावाक्य - "बच्चे, तुम सिर्फ अपना अमृतवेला ठीक करो, मैं तुम्हारा सब कुछ ठीक कर दूंगा।" इस वाक्य से मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। मैंने चार साल से अमृतवेला और तीन सालों से चार बजे का अमृतवेला का बाबा का भोग मिस नहीं किया।

इस परमात्म कृपा से न केवल मैं चल सकता हूँ, बल्कि दौड़ भी सकता हूँ। रोज़ सुबह अमृतवेले के बाद 5 बजे मैं एक घंटा मॉर्निंग वॉक और जॉगिंग करता हूँ। अब मैं 10-12 घंटे फोर व्हीलर ड्राइविंग आराम से कर सकता हूँ। अब मेरा वज़न फिर से 48 किलोग्राम से 80 किलोग्राम हो गया है। मैं दिन-रात लगातार बाबा की याद में उमंग-उत्साह में रहता हूँ। यह देख मेरे मित्र सम्बंधी सब आश्चर्य से कहते हैं, यह राहुल को ऐसा क्या मिल गया है जो इतना खुश रहता है और शरीर की सब बीमारी भी दूर हो गयी! मैं सबको बस यही कहता हूँ कि मुझे कोई डॉक्टर ठीक नहीं कर पाया। मगर उस सुप्रीम डॉक्टर परमात्मा, मेरे खुदा दोस्त ने कैसा जादू किया कि बस मैं उड़ रहा हूँ। मेरा अनुभव देख कई डॉक्टर्स भी ज्ञान में चल पड़े हैं और साथ ही साथ मुरली की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। "वाह बाबा वाह...वाह बाबा...शुक्रिया।"

यह बस एक जादू है जो केवल परमात्मा ही कर सकते हैं। परमात्मा के प्यार में लवलीन हो जाना, बिंदू में खो जाना, यही हर समस्या का समाधान और बीमारी की दवाई है।

परमात्मा के महावाक्य हैं कि "भगवान अपने बच्चों को सदा तन से, मन से और धन से सहज रखेगा, यह बाप की गैरंटी है।"

मऊ-उ.प्र.। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए वन पर्यावरण कैबिनेट मंत्री दारा सिंह चौहान, ब्र.कु. विनोद, ब्र.कु. विमला तथा अन्य।

नई दिल्ली-पोचनपुर। विद्यायक गुलाब सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात देते हुए ब्र.कु. पूजा।

फतेहगढ़-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपना अनुभव सुनाते हुए भारत रत्न ब्रिगेडियर हरवीर सिंह। साथ हैं ब्र.कु. सुमन।

नेपाल-राजविराज। 'महिला एवं आध्यात्मिकता' गोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए न्यायाधीश श्यामसुन्दर अधिकारी, उपमेयर साधना झा, पत्रकार महासंघ सप्तरी की उपाध्यक्षा सुधा देव तथा ब्र.कु. भगवती।

सुन्दर नगर-हि.प्र.। पंजाब केसरी समाचार पत्र के वरिष्ठ पत्रकार अदीप सोनी को ईश्वरीय सौगात व ब्लैसिंग कार्ड देते हुए ब्र.कु. शीला। साथ हैं ब्र.कु. उषा।

शहीद भगत सिंह नगर-पंजाब। एस.एस.पी.सतविन्दर सिंह को मीडिया द्वारा की जा रही सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. कान्ता, ब्र.कु. अंजू तथा ब्र.कु. पोखर।